रात्रिक्लास 3-10-68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?

बच्चों को बुधि में है अब अपने घर जाना है। बुधि जो आत्मा में है, बुधि कहती है कि अब तो चलने का है। जो कुछ देखने में आता है चलते चलते यह सब खत्म हो जाने का है। यह ज्ञान है ना। बाप बच्चों को समझाते हैं। बच्चों को यह निश्चय है हम इस पुरानी दुनिया के लिये नहीं पढ़ते हैं। हम वास्त पुरानी दुनिया में है ही नहीं। हम तो संगम युग पर हैं। संगम युग पर ही पुरानी दुनिया और नई दुनि का ज्ञान होता है। तुम बच्चों को ही यह ज्ञान है। आज यहां है कल वहां होंगे नई दुनिया में वाया शां बीच में सफाई भी हो जाये। हम नई दुनिया में जावेंगे तो पुरानी दुनिया की कितनी सफाई हो जाती है। वह है बिल्कु शुध। यह है बिल्कुल अशुध। इसलिये अभी अपने को आत्मा समझ देह को छोड़ना है। बच्चे जा हैं। और कोई नहीं जानते कि घर जाना है। बाप ने समझाया है तुम सभी ब्राईड्स को मैं ब्राईडग्रुम आया नई दुनिया में ले जाने लिये। तुम जानते हो हम सभी को बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। सजनियां भी भक्तियों को कहा जाता है। बच्चों को रास्ता बड़ा ही सीधा बताते हैं याद करने से पावन बनना है। इस समय तुम बच्चों को ज्ञान है हम जिसको याद करते हैं उनके पास ही पहूंच जावेंगे। भक्ति में कोई पहूंचते नहीं हैं। सा० करते हैं। तुम जानते हो हम अभी पहुंच जावेंगे। अच्छी तरह जानते भी हो फिर घर भी पहुंचते हो। बहुत समय हो गया है घर से आये। तो बच्चों को ढूढ़ने का नहीं रहता। ड्रामा में नूंध है। काम पर चढ़ कर सभी काले बन गये हैं। अर्थात भस्म हो गये हैं। आग लगती है तो सभी काले हो जाते हैं ना। अभी तुम सभी ज्ञान-चिक्षा पर सवार हो। गोरे बनें जावेंगे। बाहर जब रहते हैं तो सभी बच्चे पुरुषार्थी है। पुरुषार्थ कराने वाले भी खुद पुरुषार्थी हैं। यहां बाप को तो पुरुषार्थ करना न है। कराने वाला मिलता है। दादा को करना है। बाप को कराना है। बाहर में तुम पुरुषार्थ करते हो कराते हो। यह बातें ऐसी है जो कोई की भी बुधि में बैठ न सके। समझाने वाला जरूर चाहिए। तुम कितना भी समझा के लिखो तो भी लिखने से कोई समझ जाये वह नहीं हो सकता। स्टुडन्ट को टीचर जरूर चाहिए। यहां आने से ही बच्चे समझते हैं। और सभी तरफ से बुधि को हटाये यहां लगा देते हैं। बच्चों को सुख मिलता है। शांतिधाम सुखधाम को भी तुम जानते हो। इस याद की यात्रा का ही महत्व है। जिससे तुम पतित से पावन बनते हो। बनाने वाला यहां बैठा है। भक्ति मार्ग में महत्व की बात ही नहीं। यह भी बाबा समझाते हैं भक्ति मार्ग का चक्र पूरा फिर लगना है। सिर्फ समझाते हैं भक्ति क्या है, ज्ञान क्या है। बच्चों की बुधि भी होती जाती है। स्वदर्शनचक्रधारी बनने से ही तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। इसलिये दिखाते हैं तुम्हारे पैर में पदम हैं। पैर नहीं चलते। बुधि जाती है। तुम पदमपति बनने वाले हो। यह भी समझते हो पैर में पदम क्यों हैं। बाप कहते हैं कदम कदम में पदम है। है सारी बुधि की बात। यह समझाने वाला भी बाप चाहिए ना। ऐसे नहीं कि कोई समझा सके। ज्ञान से ही सुख मिलता है। दुःख की बात होती नहीं। ज्ञान से किसको नुकसान हो यह हो नहीं सकता। कोई मिस अन्डरस्टेन्डींग हो जाये यह और बात है। ज्ञान से कल्प कल्प सदगति होती है। उन से कोई दुर्गति वा नुकसान हो न सके। भक्ति से नुकस होता है। बाप ऐसे कब बोलेंगे नहीं जिससे कि नुकसान हो। फायदा ही फायदा, खुशी ही खुशी है। हो सकता है बच्चों को ईश्वरीय लाटरी मिलती है ना तो कोई को खुशी का पारा जोर से चढ़ जाता है। परन्तु लाटरी देने वाला फिर थोड़ा ठीक कर देते हैं। बाबा बेहद के बाप का ऐसा भूल कब निकलेगा नहीं। यह तो गैरन्टी है। बाप का नाम ही है दुःख हर्ता सुखकर्ता। तो दुःख रिंचक भी नहीं हो सकता। आज सभी फकीर है कल अमीर विश्व के मालिक बनने वाले हैं। कहावत कहते हैं ना फलो एक बनियां था .... तुम सेकण्ड में फकीर से अमीर बनते हो। यह है बेहद का गांव। कल शहर में चले जावेंगे।

=अ= अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप= नमस्ते= बाप का नमस्ते।